Human Activity in Monsoon land. (6.5)

भौगोलिक वातावरण अथवा परिवेश से तात्पर्य मनुष्य एवं प्रकृति के उन चतुर्दिक परिस्थितियों से है जो मानवीय क्रियाकलाप को प्रभावित करते हैं और जिनका अस्तित्व यदि मनुष्यों को पृथ्वी से पूर्णतः हटा भी दिया जाए तब भी बना रहता है।"
आजकल Ecologist पर्यावरण की जगह 'परिवेश' अथवा 'आवास' शब्द का अधिक प्रयोग करने लगे हैं. ऐसे ही परिवेश में एक नाम मानसून प्रदेश का भी आता है।

MONSOON :- मानसून शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के मौसिम से हुई है जिसका तात्पर्य हवाओं के मौसमी उलट-फेर से है। इसका प्रयोग अरब व्यापारी भाज से 6-7 सौ साल पहले अरब सागर में साल के छः माह उत्तर पूरब तथा दूसरे छः माह दक्षिण पश्चिम से प्रवाहित होने वाले वायु तंत्र के लिए करते थे। इस प्रकार मानसून एक ऐसे वायु प्रणाली का प्रतीक है जिसमें प्रतिवर्ष ऋतुविक प्रत्यावर्तन से विपरित दिशाओं से हवायें प्रवाहित होती हैं। संसार के वे सभी प्रदेश मानसून-प्रदेश के अंतर्गत आते हैं जहाँ ऐसी विशेषता की वायुप्रणाली मिलती है।

Extention: संसार के 8° से 32° अक्षांशों के बीच मानसूनी प्रदेश पाये जाते हैं। यह उष्ण कटिबंधीय महाद्वीपों के पूर्वी भागों में पायी जानेवाली जलवायु है इसका Typical area दक्षिण व दक्षिणपूर्व एशिया के देशों (भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, म्यानमार, थाइलैंड, लाओस, कम्पूचिया, वियतनाम, दक्षिणी चीन एवं फिलीपीन्स में मिलता है। विश्व के अन्य महाद्वीपों में - ऑस्ट्रेलिया का उत्तरी किनारा, अफ्रीका का पूर्वी किनारा एवं दक्षिण अमेरिका के पूर्वी तटीय भाग मानसून प्रदेश के अंतर्गत आते हैं। (Fig)

मानसूनी प्रदेश में मानवीय क्रियाकलापों के वर्णन से पहले यहाँ के जलवायु, धरातलीय स्वरूप व वनस्पति का संक्षिप्त विवरण उपयुक्त होगा, क्योंकि मानवीय क्रियाएं इससे बहुत हद तक प्रभावित होता है।

Climate - मानसूनी प्रदेश की व्यापकता ने इस प्रदेश में कई तरह के जलवायविक प्रभाव को जन्म दिया है. यहाँ जाड़े व गर्मी के दो स्पष्ट ऋतु के बीच एक वर्षा की भी आती है। वर्षा गर्मी के महीने में शुरु होती है वर्षा में क्षेत्रीय विषमता, धरातलीय विषमता, वृष्टिछाया के क्षेत्र, वायु मार्ग में अवरोधक का न मिलना, भौतिक कारक आदि कारणों से काफी असमान होता है। इस आधार पर मानसून प्रदेश को चार भाग - 80" से ऊपर वर्षा क्षेत्र, 40-80" वर्षा के क्षेत्र, 20"-40" वर्षा के क्षेत्र व 20" से कम वर्षा के क्षेत्र में ~~मिलते~~ बाँटते हैं। जाड़े के महीनों में हवा के स्थल के तरफ से आने के कारण मौसम शुष्क होता है। समुद्री क्षेत्र में प्रतिचक्रवात से वर्षा भी होती है।

धरातलीय स्वरूप :- मानसूनी प्रदेश के वृहत अक्षांशीय विस्तार होने से इसमें आदि कालीन चट्टानों का बना पठारी खंड, नवीन मोड़दार पर्वत श्रेणियाँ, नूतन काल में बने अत्यंत उपजाऊ समतल मैदान, तटीय मैदान, नदी घाटी जैसे सभी स्थलरूप मिलते हैं। फलतः यहाँ विविध मानवीय क्रियाकलाप भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं।

Vegetation :- यहां मुख्यतः मानसूनी वन या पतझड़ किस्म के वन मिलते हैं 200 cm वर्षा के क्षेत्र में आते हैं। यहां के पेड़ काफी बड़े व इमारती लकड़ियां देते हैं जिनकी लकड़ियां इमारती कामों के लिए काफी उपयोगी होते हैं इसे उपयोग में लाना भी आसान होता है वर्षा में कमी आते ही वन, जगह कँटीली झाड़ियां मिलनी शुरू हो जाती है जिसके बीच की खुली भूमि में वर्षा काल में घास उग आते हैं यहाँ के वनों में हाथी, सिंह, भालू, बंदर, आदि मिलते हैं।

HUMAN ACTIVITY IN MONSOON LAND.

- **A.** ECONOMIC ACTIVITY
  - Agriculture
  - Animal husbandry
  - Fishires
  - Mining & Industry
  - Transport
  - Other economic activity
- **B** SOCIAL ACTIVITY
- **C** CULTURAL ACTIVITY

A. Economic Activity :- मानसून प्रदेश, उद्योग, खनन, जल आदि के विकास के बावजूद जनाधिक्य के चलते मूलतः कृषि प्रधान कार्यकलाप जारी रहे हैं।

1. Agriculture :- मानसून प्रदेश में विविध प्रकार के कृषि कार्य किये जाते हैं। D. Whittlesy ने मानसून एशिया में कृषि के प्रमुख पांच प्रदेश पहचाना है। —(fig)

a. चलवासी पशुचारण – मानसून एशिया में दक्षिणी चीन, पश्चिमोत्तर एवं पश्चिमी पाकिस्तान एवं थार के मरुस्थल में प्रायः शुष्क प्रदेश में घुमन्तु पशुपालन होता है।

b. स्थानान्तरणशील कृषि :- ब्राजील, कुन्मिंग व अन्य जगहों के उच्च पर्वतीय क्षेत्र में जहाँ वन प्रदेश मिलते हैं; वहां प्राथमिक स्थानान्तरणशील कृषि की जाती है।

c. गहन निर्वाह कृषि :- गहन निर्वाह कृषि का तात्पर्य ऐसी कृषि से है जिसमें छोटे से कृषि क्षेत्र पर श्रम, सिंचाई व उर्वरक की अधिकता एवं सूक्ष्म तकनीकी द्वारा अधिक उत्पादन किया जाता है और इसकी संपूर्ण खपत कृषक परिवार द्वारा हो जाता है। अब इसमें थोड़ा परिवर्तन दिखते हैं क्योंकि कृषक कुछ मात्रा में अपने उपज को बेचकर नगद भी प्राप्त करने लगे हैं। गहन निर्वाह के कृषक गन्ना, कपास, जूट, मूंगफली, सोयाबीन, आदि व्यापारिक फसलों में से कोई एक उगाकर नगद प्राप्त किया करते हैं।

1. चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि : मानसून प्रदेश की अत्यधिक जनाधिक्यता ने कृषि को गहन स्वरूप दे दिया है; जहाँ पर्याप्त वर्षा होती है वहां एक ही खेत में वर्ष में 2-3 चावल के फसल उगाये जाते हैं पूर्वी भारत, भारतीय सागरीय तटीय मैदान, बांग्लादेश, दक्षिण पूर्व एशिया की नदी घाटियां एवं इनके डेल्टाई क्षेत्र; दक्षिणी पूर्वी चीन, कोरिया, जापान आदि इसी कृषि के अंतर्गत आते हैं। विश्व के कुल चावल उत्पादन का 90% चावल यहीं उपजाया जाता है। कहीं-कहीं क्षेत्र के कुल खाद्यान्न में 85-95% चावल की खेती होती है; मानसून को चावल की अर्थव्यवस्था कहते हैं।

चावल विहीन गहन निर्वाह कृषि :→ वैसे गहन निर्वाह कृषि जिसमें क्षेत्र की भौतिक व सामाजिक दशाओं के अनुसार चावल के बजाए अन्य खाद्यान्नों की प्रधानता होती है; चीन का उत्तरी प्रखंड, तथा भारत का उत्तर पश्चिमी व प्रायद्वीपीय भाग (दक्षिण भारत के पठारी) इसका मुख्य क्षेत्र हैं ऐसे क्षेत्र अर्द्ध शुष्क क्षेत्र होते हैं। यहाँ मक्का, सोयाबीन, ज्वार, बाजरा, सरसों, गेहूं, मूंगफली, आदि की खेती होती है। यहां के किसान खाद्यान्न के साथ-साथ एक दो नगदी फसल भी उगाते हैं, सिंधु घाटी में कपास के अलावा गन्ना व तम्बाकू भी उगाये जाते हैं। पूर्वी म्यानमार, उत्तरी पूर्वी थाईलैंड, एवं कम्बोडिया के सम्मिलित भागों में भी उगाये जाते हैं।

बागानी कृषि : खाद्यान्न – उत्पादन के अलावे मानसून की पहाड़ी ढलानों पर चाय, कॉफी, रबर, मसाले, नारियल आदि के पेड़ लगाए जाते हैं।

D
D
D
D
Desert land.
Monsoon land.

work :- पर्वतीय एवं पहाड़ी क्षेत्र में पत्थर काटने व तोड़ने का कार्य व्यापक रूप पर किया जाता है। ... in monsoon land.
बलुआपत्थर क्षेत्र में चट्टान की की-की सिल्लियां बनायी जाती हैं। गोवाइट, बेसाल्ट और चट्टानों के
आकृतियाँ बनायी जाती हैं। हिमालय के स्लेट क्षेत्र में पत्थरों के सिल काटे जाते हैं।

Fishery Industry :- जापान, भारत और अन्य मानसूनी देशों में मत्स्य उद्योग अत्यधिक उन्नत है क्योंकि इन क्षेत्रों में सागर के किनारे बड़े पैमाने पर मत्स्य उत्पादन की संभावनाएँ हैं। इसके अतिरिक्त महाद्वीपों के आंतरिक भागों में भी तालाब एवं नदियों में मछली पालने का कार्य होता है। धान के खेतों में भी पानी भरकर मछली पालन किया जाता है।

Animal husbandary :- जनसंख्या की अधिकता होने के कारण यहां माँस एवं दूध देने वाले पशुओं की प्रधानता होती है। दूध देने वाले पशुओं में गाय और भैंस हैं, जबकि मांस देने वाले पशुओं में सूअर, बकरी एवं मुर्गी प्रमुख हैं। हल जोतने या बोझ ढोने के लिए बैल, भैंस, खच्चर एवं घोड़े पाले जाते हैं। उन प्राप्ति के लिए पहाड़ी क्षेत्रों में भेड़ पाले जाते हैं।

Mining and Industry :- मानसूनी देशों में खनिज आधारित क्रियाकलाप भी प्रमुखता से संपन्न होता है। भारत में कोयला, लोहा, मैंगनीज, अभ्रक आदि खनिज प्राप्त होते हैं। म्यानमार एवं चीन में भी कई तरह के खनिज प्राप्त किये जाते हैं। साथ ही इन खनिज पदार्थों पर आधारित अनेक उद्योग का विकास भी हुआ है। भारत, चीन और जापान आदि देशों में विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के विकास के साथ उद्योगों का भी काफी विकास हुआ है। जनवृद्धि के साथ-साथ औद्योगिक वस्तुओं की माँग भी काफी बढ़ी है। जापान का तकनीकी ज्ञान एवं Electronic उपकरण के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धि पूरे विश्व को चकाचौंध किये हुए है। भारत में भी लौह इस्पात, सूती वस्त्र, चीनी, सिमेंट, दूर संचार आदि उद्योगों का तेजी से विकास हुआ है। चीन, बर्मा आदि देश भी औद्योगिक विकास के क्षेत्र में काफी आगे बढ़े हैं। इसके बावजूद मानसूनी देश जनाधिक्य के कारण कृषि प्रधान बना हुआ है।

SOCIAL ACTIVITIES.

मानसून प्रदेश के समाज में एक परिवार में बहुत लोगों का निर्वाह होता है। संयुक्त परिवार की परंपरा अभी भी देखी जाती है। परिवार में दादा-दादी, चाचा-चाची एक साथ रहते हैं। संयुक्त प्रथा का कारण जनाधिक्य एवं कृषि का गहन स्वरूप है। 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता' की कहावत यहाँ की उक्ति ही नहीं बल्कि आवश्यकता भी बन गयी है। कृषि कार्य में मशीनों, उपकरणों के कम प्रयोग से मानव श्रम का ही अधिक उपयोग होता है। अतः संयुक्त परिवार यहां के कृषि के लिए एक वरदान है।
Hindi — made of.

ऐसी सामाजिक व्यवस्था बांग्लादेश, चीन, भारत आदि देशों में देखने को मिलती है

CULTURAL ACTIVITIES :- प्राचीन काल से ही मानसून प्रदेश में प्राचीन सभ्यता का विकास हुआ है। फलतः यहाँ सदियों से अनेक सभ्यताओं का समागम प्रभाव देखा गया। भारत एवं चीन में प्राचीन नदियाघाटी सभ्यताएं विकसित हुई थी। अतः यहाँ कई तरह के धार्मिक विश्वास, रीतिरिवाज, धर्म आदि प्रचलित है। इस क्षेत्र में भारत, नेपाल, देशों में हिंदु धर्म प्रमुखता से माने जाते है वहीं चीन, म्यान्मार, कंबोडिया, श्रीलंका आदि देश बौद्ध धर्म को अपनाए है। पाकिस्तान, बांग्लादेश, इंडोनेशिया जैसे मुस्लिम इस्लाम बहुल देश भी है। समाज कर्मो-वेश पितृसत्तात्मक है। पर्व त्योहार भी इस क्षेत्र में खूब मनाये जाते है। अधिकतर पर्व त्योहार कृषि एवं ऋतु से जुड़े है जैसे होली, दीपावली, बैसाखी, शादी-विवाह के अवसर पर नाच, गाने, सामुहिक भोज आदि आयोजित की जाती है। संक्षेप में सभी धार्मिक कार्य यहाँ के परिवेश, जलवायु एवं भूमि के साथ जुड़ा रहा है।

CONCLUSION :- मानसूनी प्रदेश वस्तुतः एक सघन कृषि का प्रदेश है जहाँ की खेती मानसून के साथ जुआ खेलना माना जाता है। मानसून सफल रहा तो कृषि भी सफल रही है किंतु मानसून के विफल होते ही परिवार, समाज, सारे के सारे चरमरा उठते है। बावजूद इसके हरित क्रांति एवं सिंचाई आदि क्षेत्रों में सुधार ने काफी परिवर्तन ला दिया है। इसी वजह से कृषिक अर्थव्यवस्था वाले यह देश मामलों में स्वावलंबी हुई है एवं अपने संसाधन का उपयोग कर कई क्षेत्र में भी प्रगति के झंडे गाड़ रहे है।

Crops & Industry :- जंगलों के निकटता वाले नगरों में लकड़ी पर आधारित उद्योग विकसित हो गयी है इसी तरह कपास पट्टी में सूती वस्त्र उद्योग (अहमदाबाद, कोयंबटूर, मुम्बई आदि) गन्ना पेटी में चीनी उद्योग (मेरठ, मोदीनगर) जूट क्षेत्र में जूट उद्योग एवं तम्बाकू उत्पादक क्षेत्र तत्संबंधित उद्योग स्थापित किए गये है।

[illegible] :-